शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

चित्तशुद्धि

विनोबा

हमारी बुद्धि और आत्मा के बीच मलिनता का परदा पड़ा है। और जब तक वह परदा नहीं हटता, तब आत्मा का साक्षात्कार नहीं होता। आत्मा और बुद्धि के बीच का परदा चित्तशुद्धि से दूर होता है।

चित्तशुद्धि के लिए हम अपने को भूल जाएं हम मिट जाएं और समाज में लीन हो जाएं। सामने जो समाज है, उसकी सेवा हमें करनी है। बीच में हमारे राग, द्वेष, मत्सर आदि आ जाते हैं। उन्हें दूर करने के लिए यह सोचें कि हम हैं ही नहीं, समाज ही है। इसी जीवन में हमारी चित्तशु हो, समाज में समरसता आए, सबके सब आत्मरूप में मग्न हो जायें, इसके लिए हम प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना के लिए मैं हमेशा स्नान, भोजन और नींद ये तीन मिसालें देता हूं। इन तीनों से शरीर के लिए जो काम बनता है, वही मन के लिए प्रार्थना से बनता है। जैसे शरीर का क्षय होता ह, वैसे मन का भी क्षय होता है। हम शांति, पुष्टि चाहते हैं और प्रार्थना से इन तीनों की अपेक्षा रखते हैं।

प्रार्थना मन को शुद्ध करती है। शरीर रोज मैला होता है और हम उसे रोज धोते हैं। वैसे चित्त को धोने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना से चित्त में ताजगी आती है, शुद्धिकरण का अनुभव आता है। निश्चित समय पर की गयी सामूहिक प्रार्थना मन के सभी विकारों को हटा देती है। प्रार्थना में हम जो कुछ कहते हैं, वह हमारी चित्तशुद्धि के लिए होता है।

चित्तशुद्धि के लिए जीवन में अनेक गुणों का विकास करना चाहिए। अपने मन में यदि क्रोध है तो क्षमागुण विकसित करके क्रोध को दूर करें। जीवन में कठोरता होगी तो दयाबुद्धि का विकास करना चाहिए। चित्त की शुद्धि अखंड करते रहना चाहिए।

साधकों की मुख्य साधना चित्तशुद्धि यानी सद्गुण विकास है। यह सद्गुण विकास दो प्रकार से होता है - 1 अपने में जो सद्गुण हैं, उनका उत्कर्ष करना 2 अपने में जिन गुणों की कमी है, उनके लिए आदर बढ़ाना।

यज्ञ-दान-तप से चित्तशुद्धि होती है, लेकिन सबसे उत्तम साधन है, ज्ञान। ज्ञान जैसी दूसरी शुद्धिकारण प्रक्रिया नहीं। ज्ञान-तप से जो शुद्ध हुए उन्हें दूसरा तप नहीं करना पड़ता।

तत्व-जिज्ञासा उचित है, अच्छी है। लेकिन चित्तशुद्धि के बिना बुद्धि खुलती नहीं। बुद्धि जब खुल जाती है, तब शास्त्रों के अर्थ ग्रहण होते हैं। शास्त्रीय रीति से नयी खोज, शोधन आदि के लिए जो कष्ट उठाया जाता है, वह तप है। इससे ज्ञान प्राप्त होता है। चित्तशुद्धि होती है। बुद्धि के अविचार दूर होते हैं। चित्तशुद्धि के लिए यज्ञ-दान-तप, ध्यान-धारणा आदि अनेक विकर्म बताए जाते हैं। परन्तु इन साधनों को मैं सोडा-साबुन-अरीठा कहूंगा और भक्ति को पानी कहूँगा। सोडा-साबुन-अरीठा सफाई करते हैं, परन्तु पानी के बिना उनका काम नहीं चलेगा। हार्दिकता का ही अर्थ है भक्ति। मैत्री, 12 नवम्बर 2022